**ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA**
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 160-163**
**I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)**
**e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)**
**Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025**

# मैनपुरी जिले में 1857 की क्रांति की घटनाएं–एक ऐतिहासिक अध्ययन

**श्रीमती निर्मला सिंह**
एसोसिएट प्रोफेसर– इतिहास, ठा० बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला, फिरोजाबाद (उ0प्र0) भारत

**Received-09.05.2025, Revised-17.05.2025, Accepted-23.05.2025 E-mail : aaryvart2013@gmail.com**

***सारांशः** भारत के इतिहास में 1857 की क्रांति एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना है, जिसे भारतीय इतिहास में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के नाम से जाना गया है। ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए 10 मई 1857 को मेरठ शहर में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी की तीसरी घुड़सवार सेना के नेतृत्व में भारतीय सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह की प्रमुख घटनाएँ मेरठ, दिल्ली, झांसी, कानपुर, बलिया और बिहार आदि शहरों में केन्द्रित थी, लेकिन उत्तर–प्रदेश के लगभग सभी शहरों के नागरिकों ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध इस विद्रोह में भाग लिया। मैनपुरी जिले में क्रांति की शुरुआत 1857 में मई और जून के बीच में हुई, मैनपुरी के राजा तेज सिंह चौहान और उनके दरबार के अनेक अधिकारियों ने विद्रोह में भाग लिया, और उन्होंने अंग्रेज सेना नायकों का मुकाबला करते हुए 30 जून 1857 में मैनपुरी पर अधिकार कर लिया, और मैनपुरी जिले में स्वतंत्र सत्ता की स्थापना की। 1857 के विद्रोह को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने अपने सभी संसाधनों को एकत्रित कर मैनपुरी के राजा तेज सिंह को चारों ओर से घेर लिया और लगभग 6 महीनों तक शासन करने के पश्चात 27 दिसंबर 1857 को मैनपुरी के किले पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। राजा तेज सिंह ने मैनपुरी पर पुनः अधिकार करने के लिए सभी राज्यों से मदद मांगी, मदद न मिलने पर राजा तेज सिंह चौहान ने 10 जून 1858 को इटावा के जिलाधिकारी मि० ह्यूम के सामने आत्म समर्पण कर दिया। राजा तेज सिंह के अतिरिक्त गोहाना के ठा. दलवीर सिंह, शिवलाल तिवारी, बीबामऊं के गुंगदा, देहुली के गंगा सिह, मुस्तफावाद के राम रतन अहीर, जसराना के दान सहाय आदि विद्रोही नेताओं ने भी अपने अपने क्षेत्रों में 1857 के विद्रोह का सफल नेतृत्व किया और अंग्रेज़ो को मैनपुरी छोड़ कर भागने के लिए मजबूर किया। 30 जून 1857 से 27 दिसंबर 1857 तक मैनपुरी पर राजा तेज सिंह और उनके साथियों का अधिकार रहा। इस शोध पत्र में मैनपुरी जिले में 1857 की क्रांति की घटनाओं, प्रमुख व्यक्तियों, जनसमर्थन, ब्रिटिश प्रतिक्रिया और विद्रोह के परिणामों का अध्ययन किया गया है।*

***कुंजीभूत शब्द–** स्वतंत्रता, व्यक्तिगत, अधिकार, विरासत, विद्रोह, साम्राज्यवाद, युवापीढी, जनसमर्थन, संगठित, चुनौतियां, अनुपालन*

**अध्ययन का उद्देश्य–** 30 जून 1857 से 27 दिसंबर 1857 तक राजा तेजसिंह चौहान और उनके साथियों ने मैनपुरी को अंग्रेज़ सरकार से मुक्त रखा, राजा तेज सिंह चौहान और विद्रोही नेताओं की वीरता एवं साहसिक कार्य, ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रियाएं एवं विद्रोह के दीर्घ कालिक परिणामों को देश की युवा पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत करना ही इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य है।

**अध्ययन की विधि–** 1857 की क्रांति की घटनाएं, ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रियाएं और इसके परिणामों का अध्ययन करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का अध्ययन किया गया है। विभिन्न पुस्तकों एवं पत्र पत्रिकाओं से आधार सामग्री (डेटा) एकत्रित करके विश्लेषण करने के पश्चात इस शोध पत्र का संकलन किया गया है।

**प्रस्तावना–** 1857 के विद्रोह को भारतीय स्वतंत्रता इतिहास में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में जाना जाता है। यह विद्रोह 10 मई 1857 में मेरठ छावनी के तीसरी घुड़सवार सेना के नेतृत्व में भारतीय सैनिकों द्वारा की गई बगावत की घटना के साथ प्रारम्भ हुआ। 11 मई कुछ सुबह विद्रोही भारतीय सैनिक दिल्ली मुगल दरबार में पहुंच गए और उन्होनें मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर को सम्पूर्ण भारत का सम्राट घोषित कर दिया। विद्रोहियों ने हरियाणा, बिहार, मध्य प्रान्त और सयुक्त प्राप्त के सभी महत्वपूर्ण शहरों पर अपना अधिकार कर लिया। मेरठ और दिल्ली की क्रांतिकारी घटनाओं का समाचार सारे उत्तर भारत में शीघ्रता से फैल गया और सयुक्त प्रांत के लगभग सभी शहरों में विद्रोह आग की तरह फैल गया। इस विद्रोह ने ब्रिटिश सत्ता के लिए सैन्य खतरा पैदा कर दिया। विद्रोहियों ने कानपुर तथा अन्य शहरों में सैकड़ों अंग्रेज अधिकारियों, औरतों और बच्चों को मार डाला। कानपुर, मेरठ, फतेहपुर, झांसी और ग्वालियर सभी शहर में विद्रोहियों ने अंग्रेजी फौजों को पराजित कर प्रशासनिक व्यवस्थाओं पर अधिकार कर लिया।

सयुक्त प्रान्त का मैनपुरी जिला भी क्रांति की लपटों के अछूता नहीं रह सका। 22 मई 1857 में मैनपुरी जिला प्रशासन ने सरकारी खजाने की सुरक्षा में तैनात देशी पलटन नम्बर नौ के सैनिकों को कोषागार से हटाकर दूसरी जगह लगा दिया, इस घटना से उत्तेजित होकर भारतीय सैनिकों ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजा दिया। मैनपुरी जनपद में विद्रोह के प्रसार और इसके व्यापक स्वरूप से संबंधित प्रमुख घटनाएं निम्नवत थी :

**1–सरकारी शस्त्रागार और कोषागार की लूट–** मैनपुरी जिले के विद्रोही भारतीय सैनिकों ने सरकारी शस्त्रागार पर हमला कर अस्त्र–शस्त्र और गोला बारूद को लूट लिया और शस्त्रागार की सुरक्षा में तैनात अंग्रेज लेफ्टिनेंट डीकैण्ट जोब को बंदी बना लिया। उसके पश्चात विद्रोहियों ने सरकारी कोषागार पर धावा बोला और कोषागार से संपूर्ण सम्पत्ति को लूटकर अपने अधिकार में ले लिया।[1] जिलाधिकारी जॉन पावर लेफ्टिनेंट डीकैण्ट जोब को हर कीमत पर विद्रोही सैनिकों के चंगुल से मुक्त करना चाहता था, लेकिन लेफ्टिनेंट डीकैण्ट जोब ने जिला प्रशासन को सख्त चेतावनी दी, कि जिला प्रशासन विद्रोहियों के खिलाफ कोई कदम ना उठाएं, नहीं तो विद्रोही सैनिक मेरी हत्या कर देंगे,[2] यह सुनकर जिलाधिकारी जॉन पावर अपने अधिकारियों के साथ राव भवानी सिंह की गढ़ी में सुरक्षा की दृष्टि से रहने चला गया। कुछ समय बाद विद्रोही सैनिकों ने लेफ्टिनेंट डीकैण्ट जोब को मुक्त कर दिया।[3] लेफ्टिनेंट डीकैण्ट जोब भी राव भवानी सिंह की गढ़ी में जिलाधिकारी जॉन पावर के पास पहुंच गया।

**2– बेवर तथा कुसमरा में विद्रोहियों का आतंक–** जिलाधिकारी जॉन पावर को विश्वस्त सूत्रों से सूचना मिली कि विद्रोही सैनिक मैनपुरी मुख्यालय से बेवर तथा कुसमरा की ओर प्रस्थान कर रहे है, तो उसने विद्रोहियों का सामना करने के लिए तोपों व अन्य हथियारों की व्यवस्था करने का आदेश अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को दिया, लेकिन विद्रोही भीड़ के सामने जिला प्रशासन कुछ ना कर सका। संपूर्ण मैनपुरी जनपद विद्रोह की चपेट में आ गया, मालगुजारी की वसूली रुक गई, मैनपुरी जनपद का सरकारी प्रशासन पूरी तरह से ठप्प हो गया।[4] कुसमरा में अंग्रेजों के खाली आवासों को लूट लिया गया और आग लगा दी गई। काली नदी

**अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

पार करके विद्रोहियों ने टेलीग्राम की लाइनों के तार काटकर संचार व्यवस्था को भी भंग कर दिया और सरकारी वाहनों में भी आग लगा दी गई।[5] जिससे जिला प्रशासन की सभी व्यवस्थाएं चरमरा गई ।

**3– कुरावली क्षेत्र में घुड़सवार सैनिकों का विद्रोह–** लेफ्टिनेंट कारे की नेतृत्व में घुड़सवार सैनिकों की एक टुकड़ी कुरावली में रुकी हुई थी। 3 जून 1857 को यकायक इस सैनिक टुकड़ी के भारतीय सैनिकों ने भी अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। क्रोधित विद्रोही सैनिकों ने मेजर हेस, कर्नल बारवर तथा मिस्टर फेरर को मौत के घाट उतार दिया।[6] लेफ्टिनेंट कारे अपनी जान बचाकर भाग गया। कुरावली के ब्रिटिश राज भक्त ताल्लुकदार लक्ष्मण सिंह ने मृत अंग्रेजों के शवों को मैनपुरी पहुंचाया, जहां उनका अंतिम संस्कार किया गया।[7]

**4–भोगांव तहसील की लूट और आगजनी –** ब्रिटिश सरकार ने विद्रोहियों का सामना करने के उद्देश्य से मेजर रेक्स को 80 घुड़सवारों की सैनिक टुकड़ी के साथ ग्वालियर से मैनपुरी बुलाया। जिलाधिकारी जॉन पावर ने 100 घुड़सवारों का एक दल लेफ्टिनेंट डीकैण्ट जोब के नेतृत्व में विद्रोहियों का दमन करने के लिए तैयार किया। 5 जून 1857 को भोगांव के निकट लेफ्टिनेंट डीकैण्ट जोब की सेना से विद्रोहियों की भीषण मुठभेड़ हुई, जिसमें लेफ्टिनेंट डीकैण्ट जोब के सिर पर गंभीर चोट लगी और विद्रोहियों की सेना विजयी हुई, उसके पश्चात विद्रोहियों ने भोगांव तहसील के मुख्यालय को लूटकर आग लगा दी, मैनपुरी के राजा तेज सिंह चौहान के प्रोत्साहन पर विद्रोहियों ने भोगांव के पुलिस थाने को घेर लिया, जिन पुलिस वालों ने विद्रोहियों का विरोध करने का प्रयास किया, उन्हें मौत की नींद सुला दिया गया।[8] भोगांव का थानेदार अपने प्राण बचाकर भाग गया।

**5– नवीगंज और करहल क्षेत्र में विद्रोही गतिविधियां–** भोगांव क्षेत्र में मिली सफलता से विद्रोहियों का उत्साह अत्यधिक बढ़ गया था। 7 जून 1857 को जिलाधिकारी जॉन पावर को सूचना मिली कि विद्रोहियों ने नबीगंज क्षेत्र से गुजरते हुए टोल कलेक्टर मि. वेल्स और उनकी पत्नी को गंभीर रूप से घायल करके मरणासन्न अवस्था में छोड़ दिया है। रंगपुर कैथोली गांव के ब्रिटिश राजभक्त जमीदार जालिम सिंह ने मि. बेल्स और उनके परिवार पर हमले की सूचना मैनपुरी जिला मुख्यालय भेजी। उपचार के दौरान मिस्टर वेल्स की मृत्यु हो गई। 28 जून 1857 को झांसी से आये विद्रोही सैनिकों ने करहल की स्थानीय जनता व सैनिकों के सहयोग से अंग्रेजों की संपत्ति को लूट ली, उनके आवासों मैं आग लगा दी तथा अनेक ब्रिटिश सैनिकों को जान से मार दिया।[9]

**6– मैनपुरी कारागार का विध्वंस–** अपनी सफलताओं से उत्साहित होकर विद्रोहियों ने 29 जून 1857 को प्रातः काल मैनपुरी कारागार का फाटक खोल दिया और विद्रोही सैनिकों ने अंग्रेजी राज सत्ता के प्रतीक कारागार के मुख्य द्वार को तोड़ दिया। जेल से मुक्त हुए बंदियों, विद्रोहियों और सैनिकों ने जनपद मैनपुरी मुख्यालय के प्रशासनिक भवनों और इमारतों को लूट कर आग लगा दी। जून 1857 के अंत तक मैनपुरी जनपद का प्रशासन इतना पंगु हो गया कि उसकी सभी प्रशासनिक संस्थाओं से उसका नियंत्रण समाप्त हो चुका था।[10]

**7– मैनपुरी जनपद से अंग्रेज अधिकारियों का पलायन–** कारागार विध्वंस की घटना ने मैनपुरी जनपद में विदेशी सत्ता की समाप्ति का संकेत दे दिया था। मैनपुरी जनपद के जिलाधिकारी जॉन पावर को करहल के थानेदार से सूचना मिली, कि सागर से विद्रोहियों की एक विशाल सेना मैनपुरी जनपद के करहल क्षेत्र की ओर आ रही है जिसके पास 500 पैदल, एक हजार घुड़सवार और दो विशाल तोपें है। जिलाधिकारी जॉन पावर ने मैनपुरी के राजा तेज सिंह से सहायता मांगी, लेकिन राजा तेज सिंह ने अंग्रेजों की सहायता करने में अधिक रुचि नहीं दिखाई, इसीलिए जॉन पावर अपने साथियों सहित आगरा की ओर पलायन कर गया। 30 जून 1857 को अंग्रेज भाग कर शिकोहाबाद पहुंचे। मैनपुरी में केवल रिचार्ड्स, लॉरेंस तथा डोनोवन नामक तीन अंग्रेज क्लर्क रह गए थे। 30 जून को ही विद्रोहियों ने इन तीनों अंग्रेजों की भी निर्ममतापूर्वक हत्या कर दी गई।

**8– राजा तेज सिंह का मैनपुरी पर अधिकार–** मैनपुरी के राजा तेज सिंह चौहान दिल्ली के पृथ्वीराज चौहान के वंशज थे, राजा तेज सिंह के सरकार विरोधी कार्यो से असंतुष्ट होकर अंग्रेज सरकार ने उनकी रियासत के 75प्रतिशत भाग को छीन कर दूसरे जमींदारों को दे दिया था।[11] मई 1857 में मैनपुरी जनपद में विद्रोह का विस्फोट होते ही अराजकता व अव्यवस्था का वातावरण व्याप्त हो गया जब अंग्रेज़ अधिकारी मैनपुरी से पलायन कर गये, तब मैनपुरी जनपद की बागडोर राजा तेज सिंह चौहान के हाथों में आ गई। राजा ने जनपद में शांति एवं व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास किया।[12]

**9– राजा का विरोधी शक्तियों से संघर्ष–** मैनपुरी जनपद का शासन सूत्र संभालने के बाद राजा तेज सिंह को ब्रिटिश राज समर्थक शत्रुओं से संघर्ष करना पड़। भरौल गांव के अहीर चौधरी पंचम सिंह और राजा तेज सिंह चौहान की सेनाओं के बीच में संघर्ष हुआ, जिसमें राजा तेज सिंह ने पंचम सिंह की सेना को पराजित कर दिया। कुरावली परगना के ताल्लुकदार लक्ष्मण सिंह और राजा तेज सिंह का चचेरे भाई भवानी सिंह भी ब्रिटिश सरकार का समर्थक था, इसीलिए उन्होंने भी तेज सिंह चौहान के प्रशासन मे अनेक बाधाएं उत्पन्न की।

**9– बेवर समझौता–** फरुखाबाद का नवाब तफज्जुल हुसैन खान भी राजा तेज सिंह चौहान का कट्टर विरोधी था, लेकिन तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों पर विचार करने के उपरांत राजा तेज सिंह और फर्रुखाबाद के नवाब तफज्जुल हुसैन खान ने अपनी पुरानी दुश्मनी को भुलाकर 7 जुलाई 1857 में बेबर नामक स्थान पर एक मैत्री समझौता संपन्न किया, जिसे इतिहास में बेवर समझौते के नाम से जाना जाता है। इस समझौते के द्वारा दोनों राजाओं ने विदेशी सत्ता का विरोध संगठित रूप से करने का संकल्प लिया [13]

**10– मैनपुरी के अन्य विद्रोही नेता–** मैनपुरी में राजा तेज सिंह के अनेक सहयोगी जमींदार और नागरिक थे, जो अंग्रेजों के विरुद्ध राजा की मदद कर रहे थे। मैनपुरी के बीबामऊं क्षेत्र में स्थानीय विद्रोहियों ने गुंगदा नामक विद्रोही नेता के नेतृत्व में विद्रोह किया। देहुली क्षेत्र के विद्रोही नेता गंगा सिंह की गतिविधियां भी अंग्रेज अधिकारी के चिंता का विषय बनी हुई थी। मुस्तफाबाद क्षेत्र के अहीर विद्रोही नेता राम रतन के नेतृत्व में विदेशी सत्ता को चुनौती देने का प्रयास किया था। जसराना क्षेत्र के विद्रोही नेता दान सहाय ने मैनपुरी के राजा तेज सिंह की सहायता की थी।

**ब्रिटिश सरकार द्वारा विद्रोह का दमन–** राजा तेज सिंह ने मैनपुरी की सत्ता पर अधिकार करके एक स्वतंत्र शासक के रुपए कार्य करना प्रारंभ कर दिया लेकिन राजा का मैनपुरी पर अधिक दिनों तक स्थाई अधिकार नहीं रह सका। अंग्रेजी सरकार किसी भी कीमत पर विद्रोहियों का दमन करके पुनः मैनपुरी पर अपना अधिकार करना चाहती थी। ब्रिटिश सरकार ने अपनी सभी शक्तियों और संसाधनों को एकत्रित कर मैनपुरी के विद्रोहियों का दमन करने के लिए निम्नलिखित कार्य किये :

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

**1– मैनपुरी पर आक्रमण–** ब्रिटिश सरकार ने ब्रिगेडियर होपग्राण्ट के नेतृत्व में एक सैनिक टुकड़ी को मैनपुरी पर अधिकार करने की जिम्मेदारी सौंपी। 19 अक्टूबर 1857 को पूरी तैयारी के साथ ब्रिगेडियर होपग्राण्ट ने राजा तेज सिंह के चचेरे भाई राव भवानी सिंह की मदद से मैनपुरी मुख्यालय पर आक्रमण किया। राजा तेज सिंह के पास अंग्रेजों की सेना का सामना करने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं थे, इसलिए वह महल छोड़कर सुरक्षित स्थान पर चले गए। अंग्रेजी सेना ने राजा तेज सिंह के महल और किले की सभी वस्तुओं पर अधिकार कर लिया। मैनपुरी पर अधिकार करने के बाद होपग्राण्ट अंग्रेजी सेना के साथ कानपुर चला गया । जैसे ही होपग्राण्ट अंग्रेजी सेना के साथ मैनपुरी की ओर रवाना हुआ, वैसे ही राजा तेज सिंह ने पुनः मैनपुरी पर अपना अधिकार कर लिया। भवानी सिंह अंग्रेजों की शरण लेने के लिए आगरा भाग गया।

**2– मैनपुरी का ऐतिहासिक युद्ध–** मैनपुरी पर राजा तेज सिंह द्वारा पुनः अधिकार करने की घटना को अंग्रेज सरकार ने चुनौती के रूप में स्वीकार किया। दूसरी ओर राजा तेज सिंह ने भी अंग्रेजों का मुकाबला करने के लिए सशस्त्र सैनिक, गोला बारूद और तोपों को एकत्रित करना प्रारंभ किया। इस बार अंग्रेजों ने तेज सिंह की शक्ति को समूल नष्ट करने का निश्चय किया। चीफ कमिश्नर कर्नल एच. फ्रेजर ने मैनपुरी के विद्रोहियों का दमन करने का दायित्व लेफ्टिनेंट कर्नल सीटन को सौंपा था।[14] कर्नल सीटन कासगंज से एटा होते हुए 22 दिसंबर को मैनपुरी तक आ पहुंचा। राजा तेज सिंह ने अंग्रेजी सेना का मुकाबला करने के उद्देश्य से अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित एक सेना का गठन किया। अंग्रेजी सेना ने मैनपुरी के किले तथा छावनी को एक साथ घेरकर राजा की सेना पर गोलाबारी करना प्रारंभ कर दिया, राजा तेज सिंह की सेना अंग्रेजी सेना के सामने अधिक समय तक टिक ना सकी और और शीघ्र ही तितर बितर हो गई। राजा तेज सिंह मैनपुरी से पलायन कर गए। इस युद्ध में राजा तेज सिंह की सेना के ढाई हजार सैनिक शहीद हो गए। कैप्टन हडसन ने 15 मील तक का चक्कर लगा–लगाकर विद्रोही सैनिकों का ढूंढ–ढूंढ कर उनकी हत्या कर दी। मैनपुरी के इस निर्णायक ऐतिहासिक संग्राम में अंग्रेजी सेनाओं की विजय हुई। 27 दिसंबर 1857 में मैनपुरी के किले पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। 11 जनवरी 1858 को राजा तेज सिंह की रियासत को जप्त करने की घोषणा सरकारी गजट में प्रकाशित हुई।

**3– राजा तेज सिंह द्वारा आत्मसमर्पण**– अंग्रेजी सरकार राजा तेज सिंह को पकड़ने का पूरा प्रयास कर रही थी। किसी भी राजा से मदद न मिलने पर विवश होकर राजा तेज सिंह ने 10 जून 1858 को इटावा के जिलाधिकारी मि. ह्यूम के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया। 24 मई 1859 को राजा तेज सिंह को कड़ी सुरक्षा में इटावा से बनारस ले जाया गया। वहां राजा तेज सिंह को ₹250 प्रति माह की पेंशन पर एक कोठी में नजरबंद करके रखा गया। 1899 में 64 वर्ष की आयु में बनारस में राजा तेज सिंह का देहांत हो गया।

**4– मैनपुरी जनपद के अन्य विद्रोहियों का दमन**– राजा तेज सिंह की पराजय होने के बाद ब्रिटिश सरकार ने मैनपुरी के बीबामऊं क्षेत्र के विद्रोही नेता गुंगदा के गांव पर आक्रमण कर विद्रोहियों का दमन किया। देहुली क्षेत्र के विद्रोही नेता गंगा सिंह की गतिविधियों का दमन करने के लिए कर्नल रिडेल की सेना ने देहुली क्षेत्र घेर लिया। गंगा सिंह को बंदी बनाने में सफलता न मिलने पर ब्रिटिश सरकार ने गंगा सिंह को डाकू घोषित कर दिया। मुस्तफाबाद क्षेत्र के राम रतन अहीर नामक विद्रोही नेता दमन करने के लिए अंग्रेजी सेना पहुंची, फारिया की रानी ने राम रतन को अपनी किले में शरण दी तो अंग्रेज अधिकारियों ने रानी के किले में आग लगा दी, दमनात्मक कार्यवाहियों की फलस्वरुप मुस्तफाबाद क्षेत्र विद्रोही गतिविधियों से मुक्त हो गया जसराना क्षेत्र के विद्रोही नेता दान सहाय ने मैनपुरी के राजा तेज सिंह की सहायता की थी, इसलिए अंग्रेज प्रशासन ने दान सहाय की गढ़ी को ध्वस्त कर दिया और दान सहाय को बंदी बना लिया। खैरगढ़ के जमींदार रेवती रमन सिंह चौहान पर विद्रोहियों की सहायता करने का आरोप लगाकर उनकी जमीन, जायदाद और जमीदारी को जप्त कर लिया। भरौल के इंद्रजीत सिंह ने मैनपुरी के राजा तेज सिंह का साथ दिया था, इसलिए उसे भी फांसी की सजा दी गई। नगला खुशाली के पंडित सदासुख, भदान के लोचन सिंह तथा मनोहर सिंह, हाथवंत के समर सिंह तथा गीतम सिंह और फारिया की रानी रतनकुंवरि की जागीर जप्त कर ली गई। इस प्रकार दिसंबर 1858 तक मैनपुरी जनपद में सभी विद्रोही गतिविधियां पूर्णतया शांत हो गई।

**ब्रिटिश राज भक्तों को पुरस्कार–** मैनपुरी जिले में 1857 के विद्रोह को दबाने में मदद करने वाले लोगों को ब्रिटिश सरकार के द्वारा पुरस्कृत किया गया। मैनपुरी के राजा तेज सिंह चौहान के चचेरे भाई भवानी सिंह को मैनपुरी की गढ़ी का स्वामी घोषित किया गया क्योंकि भवानी सिंह ने विद्रोह की अवधि में अंग्रेज सरकार का सहयोग किया था। भरौल के अंग्रेज समर्थक करण सिंह व अन्य चौधरियों को बड़ी मात्रा में जमीन जायदाद प्रदान की गई। फारिया की देशभक्ति रानी रतनकुंवरि की जागीर जप्त कर, कोटला की अंग्रेज समर्थक महारानी मेहताब कुंवरि को पुरस्कार में दी गई।

**निष्कर्ष–** भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में 1857 का विद्रोह एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है, इसीलिए भारतीयों ने इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की भी संज्ञा दी है, भले ही यह विद्रोह असफल हो गया था, लेकिन मैनपुरी के राजा तेज सिंह चौहान के नेतृत्व में मैनपुरी 6 महीने के लिए अंग्रेजी शासन से स्वतंत्र रहा, इस विद्रोह ने भारतीयों में राष्ट्रीयता की नींव रखी और ब्रिटिश सरकार ने भी भू राजस्व नीतियों में बदलाव किया। भारतीय उद्योगों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया और अपनी आर्थिक नीतियों में भी परिवर्तन की संकेत दिए। इस प्रकार 1857 में अंग्रेजी सत्ता को चुनौती देने वाला विद्रोह प्रथम स्वतंत्रता संग्राम ही था जिसने भारतीय जनसाधारण के जीवन को भी अत्यधिक प्रभावित किया और उसके अंदर राष्ट्रीयता की भावना को विकसित किया। मैनपुरी जिले के राजा तेज सिंह चौहान और उनकी देशभक्त जनता का त्याग, बलिदान, साहस, वीरता और देशभक्ति को युगों–युगों तक याद किया जाता रहेगा, जिन्होंने अपने जीवन की परवाह न करके मैनपुरी को अंग्रेजों से स्वतंत्र करने में अपना तन, मन, धन सभी न्योछावर कर स्वतंत्र करा लिया था।

## सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. चिन्तामणि शुक्ल (1965) मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, दिल्ली पृष्ठ संख्या–37, 38.
2. रिजवी और भार्गव (1957) फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश भाग– 5, सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, लखनऊ पृष्ठ सं.643–44.
3. चिन्तामणि शुक्ल (1965) मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, दिल्ली पृष्ठ संख्या–39.
4. रिजवी और भार्गव (1957) फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश भाग– 5, सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, लखनऊ पृष्ठ सं.– 664.
5. एच.आर. नवेल्स – जिला गजेटियर्स ऑफ़ यूनाइटेड प्रोविंसेज आफ आगरा एंड अवध जिल्द 10 मैनपुरी डिस्ट्रिक्ट इलाहाबाद 1910,पृष्ठ सं.–181.

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

6. चंद्रशेखर उपाध्याय, आगरा कमिश्नरी की क्रांतिवीर, दैनिक जागरण आगरा, 5 मार्च 1997 पृष्ठ संख्या–3.
7. नरेश चंद सक्सेना (1988) मैनपुरी जनपद का स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास मैनपुरी।
8. रिजवी और भार्गव (1957) फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश भाग– 5, सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, लखनऊ पृष्ठ सं.–645.
9. चिन्तामणि शुक्ल (1965) मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, दिल्ली पृष्ठ संख्या–41,42.
10. चंद्रशेखर उपाध्याय, आगरा कमिश्नरी की क्रांतिवीर, दैनिक जागरण आगरा , 5 मार्च 1997 पृष्ठ संख्या–3.
11. एच.आर. नवेल्स– जिला गजेटियर्स ऑफ़ यूनाइटेड प्रोविंसेज आफ आगरा एंड अवध जिल्द 10 मैनपुरी डिस्ट्रिक्ट इलाहाबाद 1910,पृष्ठ सं–183.
12. रिजवी और भार्गव ( 1957 ) फ्रीडम स्ट्रगल इन उत्तर प्रदेश भाग– 5, सूचना विभाग उत्तर प्रदेश , लखनऊ पृष्ठ सं. –651.
13. एच.आर. नवेल्स – जिला गजेटियर्स ऑफ़ यूनाइटेड प्रोविंसेज आफ आगरा एंड अवध जिल्द 10 मैनपुरी डिस्ट्रिक्ट इलाहाबाद 1910,पृष्ठ सं–186.
14. ई.टी एटकिंसन ( 1877 ) स्टेटिस्टीकल डिस्क्रिप्टिव एंड हिस्टॉरिकल अकाउंट का मैनपुरी डिस्ट्रिक्ट , इलाहाबाद , पृष्ठ संख्या 212– 13.

*****